मैं ऐसा सम्बन्ध होता है कि निष्कर्ष आधारवाक्य से आपादित होते हैं;

जैसे—

सभी मन्त्री स्नातक हैं।
महेन्द्र एक मन्त्री हैं।
अतः महेन्द्र एक स्नातक है।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि युक्ति के आधार वाक्यों, सभी मन्त्री स्नातक हैं और महेन्द्र एक मन्त्री हैं, में यह निहित है कि महेन्द्र स्नातक है अर्थात् इसमें दोनों आधार वाक्य से अधिक व्यापक नहीं होता। निगमनात्मक युक्तियों में सामान्य तर्कवाक्य से विशेष तर्कवाक्य निकाला जाता है।